टिप्पणी

6

व्यवसाय संगठन का कम्पनी स्वरूप

आपको यह ज्ञात होगा कि द्वितीय पंचवर्षीय योजना के दौरान भारत के अल्प विकसित क्षेत्रों में औद्योगिकीकरण को बढ़ावा देने हेतु पाँच लोहे के कारखानों की स्थापना की गई थी। क्या आप जानते हैं कि इन लोहे के कारखानों का स्वामी कौन है? कारखानों का स्वामित्व भारत सरकार के पास है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए भारत सरकार ने भारतीय स्टील प्राधिकरण (सेल) नामक एक संयुक्त पूँजी कम्पनी की स्थापना की। आपने भारतीय स्टेट बैंक (एस.बी.आई), नेशनल थर्मल पॉवर कार्पोरेशन (एन.टी.पी.सी), ग्रासिम इंडस्ट्रीज लिमिटेड (जी. आई.एल), रिलायंस इन्डस्ट्रीज लिमिटेड (आर.आई.एल) और टाटा स्टील लिमिटेड के बारे में अवश्य सुना होगा। ये सभी बड़े व्यावसायिक संगठन हैं जिन्हें संयुक्त पूँजी कम्पनियों के रूप में संगठित किया गया है। इस पाठ में हम विस्तार से इन संयुक्त पूँजी कम्पनियों, इनके गुणों एवं सीमाओं तथा इनको प्रभावित करने वाले कारकों के विषय में चर्चा करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप:

- संयुक्त पूँजी कम्पनी का अर्थ एवं इसकी विशेषताएं बता सकेंगे;
- विभिन्न प्रकार की संयुक्त पूँजी कम्पनियों की पहचान कर सकेंगे;
- सार्वजनिक एवं निजी कम्पनियों के बीच अन्तर बता सकेंगे;
- संयुक्त पूँजी कम्पनियों के गुण, सीमाएं एवं उपयुक्तता की व्याख्या कर सकेंगे;
- व्यावसायिक संगठन के उपयुक्त स्वरूप के चयन को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान कर सकेंगे;
- संयुक्त पूँजी कम्पनी एवं साझेदारी और सयुंक्त पूँजी कम्पनी एवं सहकारी समितियों के बीच अन्तर कर सकेंगे; तथा

टिप्पणी

- बहुराष्ट्रीय निगम की अवधारणा की व्याख्या एवं इनके गुणों तथा सीमाओं की पहचान कर सकेंगे।

6.1 संयुक्त पूँजी कम्पनी

पिछले पाठ में आपने व्यावसायिक संगठनों के चारों रूपों, एकल स्वामित्व, साझेदारी, संयुक्त हिंदू परिवार व्यवसाय और सहकारी समितियों के विषय में विस्तार से पढ़ा। आप जानते हैं कि व्यावसायिक संगठनों के ये रूप छोटे एवं मध्यम आकार के व्यवसायों के लिए उपयुक्त हैं। अतः यदि आप सीमेंट का एक संयन्त्र स्थापित करना चाहते हैं, जिसके लिए करोड़ों रुपयों के निवेश की आवश्यकता है, तब इस स्थिति में आप क्या करेंगे? आप साझेदारी में सीमेंट संयंत्र लगाने के विषय में सोच सकते हैं। लेकिन जब साझेदारी की सीमाओं के विषय में स्मरण करेंगे, तो आप निश्चित रूप से 'ना' कह देंगे। जिस व्यवसाय में भारी निवेश की आवश्यकता होती है उसके लिए साझेदारी एक उचित विकल्प नहीं है। आप जानते हैं कि साझेदारी के सदस्यों की संख्या पर प्रतिबन्ध है अतः सीमेंट संयंत्र लगाने के लिए आवश्यक पूँजी का प्रबंध करना सम्भव नहीं होगा। यहां तक कि यदि लोग पूँजी का प्रबंध करने में सक्षम भी हैं तब भी, असीमित उत्तरदायित्व के कारण कोई भी इतना बड़ा जोखिम नहीं उठाना चाहेगा। ऐसी स्थिति में व्यावसायिक संगठन के स्वरूप कम्पनी अथवा संयुक्त पूँजी कम्पनी प्रत्यक्ष पसंद हो सकती है। इसके सदस्यों से बहुत बड़ी पूँजी का प्रबंध आसानी से किया जा सकता है।

एक संयुक्त पूँजी कम्पनी अथवा एक साधारण कम्पनी सदस्यों का एक स्वैच्छिक सगंठन होता है जिसका गठन सामान्यतः किसी बड़ी व्यावसायिक कार्य को करने के लिए किया जाता है। इसकी स्थापना एवं विघटन भी विधि–सम्मत होता है। कम्पनी का अपना अलग वैधानिक अस्तित्व होता है क्योंकि यदि इसके सदस्यों की मृत्यु भी हो जाती है, तब भी कम्पनी का अस्तित्व बना रहता है। इसके सदस्य **समान उद्देश्य** के लिए धन का अंशदान देते हैं। इस तरह से एकत्रित धन **पूँजी** कहलाता है। कम्पनी की पूँजी को छोटे–छोटे समान भागों में बांटा जाता है जो **अंश** कहलाते हैं। चूंकि इसके सदस्य कम्पनी के अंशों को खरीदकर सदस्यता प्राप्त करते हैं इसलिए उन्हें अंशधारी कहा जाता है तथा कम्पनी की पूँजी को अंश पूँजी के नाम से जाना जाता है।

भारत में, संयुक्त पूँजी कम्पनियां, कम्पनी अधिनियम, 1956 के द्वारा शासित होती हैं। इस अधिनियम के अनुसार कम्पनी से तात्पर्य, इस अधिनियम के अन्तर्गत बनी पंजीकृत कम्पनी अथवा पहले से स्थापित कम्पनी से है। पहले से स्थापित कम्पनी से अभिप्राय है ''कम्पनी पहले से किसी पूर्व कम्पनी अधिनियम के अन्तर्गत स्थापित एवं पंजीकृत है।'' यह परिभाषा कम्पनी की मूल विशेषताओं को स्पष्ट रूप से प्रकट नहीं करती है, तथापि पूर्व कम्पनी एक्ट में दी गई परिभाषा के तथा अन्य न्यायिक निर्णयों के आधार पर इसे निम्न प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है– ''कानून द्वारा निर्मित ऐसा कृत्रिम व्यक्ति जिसका पृथक–वैधानिक अस्तित्व होने के साथ चिर स्थायी जीवन काल हो।''

टिप्पणी

6.2 संयुक्त पूँजी कम्पनी की विशेषताएँ

आप अब कम्पनी की अवधारणा से अवगत हो गए हैं। आइए, अब इसकी विशेषताओं के बारे में अध्ययन करें।

(क) कृत्रिम व्यक्ति : एक संयुक्त पूँजी कम्पनी इस अर्थ में कृत्रिम व्यक्ति है कि इसका निर्माण कानून द्वारा हुआ है तथा किसी साधारण व्यक्ति की तरह इसका कोई भौतिक स्वरूप नहीं है। यह न तो खा सकती है और न घूम–फिर ही सकती है; न लिख और पढ़ सकती है; और न ही हंस सकती है तथा न ही विवाह कर सकती है। लेकिन वस्तुतः वास्तविक व्यक्ति की तरह इसका वैधानिक अस्तित्व है।

(ख) स्थापना : संयुक्त पूँजी कम्पनी की स्थापना में काफी समय लगता है क्योंकि इसे व्यवसाय शुरू करने से पहले कई वैधानिक दस्तावेजों को पूरा कर, वैधानिक औपचारिकताओं को पूरा करना होता है। एक कम्पनी केवल तभी स्थापित की जा सकती है जब कि वह कम्पनी अधिनियम के अन्तर्गत पंजीकृत हो। हम अगले पाठ में संयुक्त पूँजी कम्पनी के गठन के विषय में विस्तृत रूप से अध्ययन करेंगे।

(ग) पृथक वैधानिक अस्तित्व : कृत्रिम व्यक्ति होने से एक कम्पनी का अस्तित्व इसके सदस्यों से पृथक होता है। यह अपने नाम से संविदा कर सकती है, वस्तुओं की खरीदारी एवं विक्रय कर सकती है, लोगों को नियुक्त कर सकती है तथा कोई भी वैधानिक कार्य कर सकती है। यह मुकदमा चला सकती है एवं इसके विरुद्ध न्यायालय में मुकदमा दायर किया जा सकता है। एक अंशधारी को कम्पनी के किसी भी कार्य के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता।

(घ) सार्वजनिक मुहर : चूंकि कम्पनी का भौतिक अस्तित्व नहीं होता है अतः उसका निदेशक मण्डल ही उसकी ओर से कार्य करता है। लेकिन उनके द्वारा सम्पन्न सभी संविदे पर कम्पनी की मुहर होती है। यह सार्वजनिक मुहर ही कम्पनी के आधिकारिक हस्ताक्षर होते हैं। कम्पनी के एक अधिकारी द्वारा मुहर सहित हस्ताक्षारित दस्तावेज, कम्पनी पर बाध्य होते हैं।

(ङ) स्थायी अस्तित्व : कम्पनी का अस्तित्व लम्बे समय तक रहता है। उसके सदस्यों की मृत्यु, पागलपन, दिवालियापन अथवा सेवा–निवृत्ति कम्पनी के जीवन पर कोई प्रभाव नहीं डालती। यह चलती रहती है। चूंकि यह कानून द्वारा स्थापित होती है, इसलिए इसका विघटन भी कानून द्वारा ही संभव है।

(च) सदस्यों का सीमित उत्तरदायित्व : व्यवसाय का कम्पनी स्वरूप लोगों को बड़ी संख्या में अंशों की खरीदारी में निवेश करने के लिए आकर्षित करता है क्योंकि यह उनको सीमित दायित्व की सुविधा प्रदान करता है। एक सदस्य का उत्तरदायित्व उसके अंशों के मूल्य तक ही सीमित रहता है। दूसरे शब्दों में – एक सदस्य को उसके अंशों के

टिप्पणी

अंकित मूल्य तक ही उत्तरदायी ठहराया जा सकता है और यदि उसने इनका मूल्य चुका दिया है तो उसे और अधिक राशि देने के लिए नहीं कहा जा सकता। उदाहरण के लिए– यदि 'अ' ने 100 रुपये वाले अंश के सिर्फ 75 रुपये दिये हैं तो उसका दायित्व केवल 25 रुपये तक ही सीमित रहेगा।

(छ) अंशों की हस्तांतरणीयता : एक सार्वजनिक कम्पनी के सदस्य अपने अंशों का हस्तांतरण करने के लिए स्वतन्त्र होते हैं। उन्हें अपने अंशों का हस्तांतरण करने के लिए किसी अन्य अंशधारक की अनुमति लेने की आवश्यकता नहीं है।

(ज) सदस्यता : एक निजी कम्पनी की स्थापना के लिए कम से कम दो सदस्य तथा सार्वजनिक कम्पनी की स्थिति में सात सदस्यों की आवश्यकता होती है। एक निजी कम्पनी में सदस्यों की अधिकतम संख्या पचास हो सकती है, जबकि सार्वजनिक कम्पनी में सदस्यों की अधिकतम संख्या के विषय में कोई सीमा निर्धारित नहीं है।

(झ) प्रजातांत्रिक प्रबन्ध : आप जानते हैं कि कम्पनी की पूँजी में विभिन्न वर्गों एवं क्षेत्रों के लोग अपना अंशदान देते हैं। अतः उनके लिए कम्पनी का दिन–प्रतिदिन का प्रबन्ध देखना संभव नहीं है। वे कम्पनी की सामान्य नीतियों के निर्धारण में तो भाग ले सकते हैं परन्तु कम्पनी के दिन–प्रतिदिन के मामलों का प्रबंध उनके द्वारा चुने हुए प्रतिनिधि जिन्हें 'निदेशक' कहते हैं, के द्वारा ही किया जाता है।

पाठगत प्रश्न 6.1

1. यदि किसी संयुक्त पूँजी कम्पनी के सभी सदस्य किसी सड़क दुर्घटना में मारे जाएँ तो कम्पनी को बन्द करना पड़ेगा। क्या आप इस कथन से सहमत हैं? अपने उत्तर के पक्ष में कारण बताइये।

2. संयुक्त पूँजी कम्पनी के संदर्भ में निम्नलिखित का नाम दीजिए –

   (क) वह छोटी इकाई जिसमें कम्पनी की पूँजी को बाँटा जाता है।

   (ख) वह अधिनियम जो भारत में संयुक्त पूँजी कम्पनी को शासित करता है।

   (ग) संयुक्त पूँजी कम्पनी के सदस्यों द्वारा लगाई गई कुल राशि।

   (घ) संयुक्त पूँजी कम्पनी के आधिकारिक हस्ताक्षर।

   (ङ) सदस्यों द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि जो संयुक्त पूँजी कम्पनी के दिन–प्रतिदिन के कार्यों को देखते हैं।

टिप्पणी

6.3 संयुक्त पूँजी कम्पनी के प्रकार

हमारे देश में कई प्रकार की कम्पनियां हैं जिनको उनके निगमन के प्रकार, कार्यक्षेत्र, राष्ट्रीयता और सदस्यता की सीमाओं आदि के आधार पर एक–दूसरे से अलग किया जा सकता है। इनमें सबसे महत्वपूर्ण वे कम्पनियां हैं जो सदस्यों की सीमा पर आधारित हैं जैसे– 1. निजी कम्पनी और 2. सार्वजनिक कम्पनी। आइए, इन दोनों के बारे में कुछ और जानकारी प्राप्त करें।

(1) निजी कम्पनी

कम्पनी अधिनियम के अन्तर्गत 'निजी कम्पनी' से अभिप्राय उस कम्पनी से है जिसमें निम्नलिखित विशेषताएं हों–

(क) इसके सदस्यों की संख्या 50 से अधिक नहीं हो सकती। कम्पनी में काम करने वाले कर्मचारी इसमें सम्मिलित नहीं हैं।

(ख) यह खुले निमन्त्रण द्वारा जनता को अपने अंश और ऋण–पत्र खरीदने के लिए आमंत्रित नहीं कर सकती।

(ग) यह सदस्यों को उनके अंशों को हस्तांतरित करने अथवा बेचने का अधिकार नहीं देती।

(घ) इसकी चुकता अंश पूँजी कम से कम एक लाख रुपये अवश्य होनी चाहिए।

निजी कम्पनियों को उपर्युक्त सभी शर्तों का पालन करना आवश्यक है। इन कम्पनियों को अपने नाम के पीछे 'प्रा०लि०' (प्राइवेट लिमिटेड) लिखना अनिवार्य है। इन कम्पनियों का स्वामित्व केवल कुछ लोगों तक ही सीमित रहता है। इसे शुरू करने के लिए कम से कम दो व्यक्तियों की आवश्यकता होती है। जब कभी साझेदारों को अपना व्यवसाय बढ़ाने के लिए अधिक पूँजी की आवश्यकता होती है, वे अपनी फर्म को निजी कम्पनी के रूप में परिवर्तित कर देते हैं। यहां यह जानना आवश्यक है कि निजी कम्पनियों को कम्पनी अधिनियम से अनेक छूट प्राप्त होती हैं। वास्तव में उनको व्यावसायिक संगठन के दोनों स्वरूपों कम्पनी एवं साझेदारी का लाभ प्राप्त हो जाता है।

(2) सार्वजनिक कम्पनी

बड़े पैमाने पर व्यवसाय आरंभ करने के लिए बड़ी मात्रा में पूँजी की आवश्यकता होती है जिसका निजी कम्पनी के पचास सदस्य भी उपलब्ध नहीं कर सकते हैं। तो ऐसी स्थिति में एक सार्वजनिक कम्पनी की स्थापना करना ही उचित होगा। एक सार्वजनिक कम्पनी का अर्थ उस कम्पनी से है जो निजी कम्पनी नहीं है। एक सार्वजनिक कम्पनी में निम्नलिखित विशेषताएं होनी आवश्यक हैं :

(क) यह जनता को अपने अंशों और ऋण–पत्रों को क्रय करने के लिए आमंत्रित कर सकती है।

टिप्पणी

(ख) सार्वजनिक कम्पनी की स्थापना के लिए न्यूनतम सात सदस्यों की आवश्यकता होती है। इसके सदस्यों की अधिकतम संख्या के लिए कोई सीमा नहीं है।

(ग) अंशों के हस्तांतरण पर कोई भी प्रतिबंध नहीं है। उदाहरणतया अंशधारक अपने अंशों को जनता को बेचने के लिए स्वतन्त्र हैं।

(घ) कम्पनी की न्यूनतम पांच लाख रुपये की चुकता पूँजी होनी चाहिए।

एक सार्वजनिक कम्पनी को अपने नाम के बाद लिमिटेड लिखना आवश्यक है। रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड, बजाज ऑटो लिमिटेड, हिन्दुस्तान यूनीलीवर लिमिटेड, स्टील अथारिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड आदि सार्वजनिक कम्पनियां है।

उपर्युक्त कम्पनियों के अतिरिक्त आपका ध्यान शायद कुछ अन्य प्रकार की कम्पनियों की ओर भी आकर्षित हुआ होगा, जैसे–सरकारी कम्पनी, सांविधिक कम्पनी, राजपत्रों द्वारा निर्मित कम्पनियां, विदेशी कम्पनी, भारतीय कम्पनी, बहुराष्ट्रीय निगम, नियंत्रक कम्पनी और सहायक कम्पनी इत्यादि। आइए, इनके बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त करें।

(क) सरकारी कम्पनी : ऐसी कोई कम्पनी जिसमें कम से कम 51 प्रतिशत चुकता पूँजी सरकार के पास हो, सरकारी कम्पनी कहलाती है। उदाहरणः– भारतीय टेलीफोन इन्डस्ट्रीज (आई टी आई), भारत हेवी इलैक्ट्रीकल्स् लिमिटेड (बी.एच.ई.एल.)।

(ख) सांविधिक कम्पनी : संसद अथवा राज्य विधायिका के विशेष अधिनियम द्वारा गठित कम्पनी, सांविधिक कम्पनी कहलाती है। उदाहरणः– भारतीय जीवन बीमा निगम (एल आई सी), भारतीय प्रतिभूति विनिमय बोर्ड (SEBI)

(ग) चार्टर्ड कम्पनी : इग्लैंड के राजा या रानी के घोषणा–पत्र के अन्तर्गत गठित कोई कम्पनी। उदाहरण–ईस्ट इंडिया कम्पनी।

(घ) विदेशी कम्पनी : ऐसी कम्पनी जिसका निगमन भारत से बाहर हुआ है लेकिन उसका व्यवसाय भारत में होता है, विदेशी कम्पनी कहलाती है। उदाहरण – सिटी बैंक, हौंडा मोटर्स इत्यादि।

(ङ) भारतीय/स्वदेशी कम्पनी : भारतीय कम्पनी अधिनियम के अन्तर्गत पंजीकृत कम्पनी भारतीय/स्वदेशी कम्पनी कहलाती है। उदाहरण – एसोसिएटेड सीमेंट कम्पनी (ए सी सी), टाटा स्टील लिमिटेड इत्यादि।

(च) बहुराष्ट्रीय निगम (कम्पनी) : ऐसी कम्पनी जिसका पंजीकरण तो एक देश में हुआ हो लेकिन उसका व्यापार कई देशों में चलता हो, बहुराष्ट्रीय निगम/कम्पनी कहलाती है। हम बहुराष्ट्रीय निगम के विषय में इस पाठ के अन्तिम अनुभाग में चर्चा करेंगे।

(छ) नियंत्रक एवं सहायक कम्पनी : यदि एक कम्पनी किसी दूसरी कम्पनी का नियंत्रण करती है तो नियंत्रण करने वाली कम्पनी को 'नियंत्रक कम्पनी' तथा दूसरी को 'सहायक कम्पनी' के नाम से जाना जाता है।

टिप्पणी

निम्न परिस्थितियों में कोई कम्पनी किसी अन्य कम्पनी की सहायक कम्पनी बन जाती है:

1. जब किसी कम्पनी की समता अंश पूँजी के सामान्य मूल्य का ५० प्रतिशत या अधिक पर किसी दूसरी कम्पनी का नियंत्रण हो।
2. जब एक कम्पनी का अन्य कम्पनी के निदेशक मण्डल की नियुक्ति पर नियंत्रण हो।
3. जब कोई कम्पनी किसी ऐसी अन्य कम्पनी की सहायक कम्पनी हो जो स्वयं किसी दूसरी की सहायक हो। उदाहरण के लिए–कम्पनी 'ख' कम्पनी 'क' की सहायक है तथा 'ग' कम्पनी, 'ख' की सहायक है, तब कम्पनी 'ग' भी 'क' की सहायक कम्पनी होगी।

6.4 निजी कम्पनी और सार्वजनिक कम्पनी में अन्तर

निजी कम्पनी और सार्वजनिक कम्पनी का अर्थ जानने के बाद अब आप दोनों के बीच अन्तर करने में सक्षम होगें। निजी कम्पनी और सार्वजनिक कम्पनी के मध्य भिन्नता के कुछ मुख्य बिन्दु निम्न प्रकार से हैं:

भिन्नता का आधार	निजी कम्पनी	सार्वजनिक कम्पनी
1. सदस्यों की न्यूनतम संख्या	निजी कम्पनी के लिए न्यूनतम दो सदस्य होने आवश्यक हैं।	इसमें न्यूनतम सात सदस्य होने आवश्यक हैं।
2. सदस्यों की अधिकतम संख्या	निजी कम्पनी में अधिकतम पचास सदस्य हो सकते हैं।	सार्वजनिक कम्पनी में सदस्यों की अधिकतम संख्या पर ऐसी कोई सीमा नहीं है।
3. न्यूनतम चुकता पूँजी	निजी कम्पनी की न्यूनतम एक लाख रुपये की चुकता पूँजी होनी आवश्यक है।	इसमें न्यूनतम पाँच लाख रुपये की चुकता पूँजी होनी जरूरी है।
4. पहचान	निजी कम्पनी को अपने नाम के पीछे प्राइवेट लिमिटेड लिखना जरूरी है।	सार्वजनिक कम्पनी अपने नाम के पीछे 'लिमिटेड' लिखना जरूरी है।
5. अंशों का हस्तांतरण	निजी कम्पनी के अंश धारक अपने अंशों का हस्तांतरण नहीं कर सकते।	सार्वजनिक कम्पनी के अंशधारक अपने अंशों का विक्रय स्वतन्त्र रूप से कर सकते हैं।
6. जनता को अंशों एवं ऋण–पत्रों के क्रय के लिए आमंत्रित करना	एक निजी कम्पनी जनता को अंशों एवं ऋण–पत्रों को क्रय करने के लिए खुला निमंत्रण नहीं दे सकती।	सार्वजनिक कम्पनी जनता को अंशों और ऋण–पत्रों को क्रय करने के लिए विवरणिका जारी कर आमंत्रित कर सकती है।

टिप्पणी

7. व्यवसाय का आरंभ	निजी कम्पनी अपने निगमन के उपरान्त तुरन्त व्यवसाय आरंभ कर सकती है।	सार्वजनिक कम्पनी अपने निगमन के तुरन्त बाद व्यवसाय शुरू नहीं कर सकती। इसे व्यवसाय आरंभ करने के लिए अपना व्यवसाय आरंभ करने का प्रमाण पत्र लेना होता है।

पाठगत प्रश्न 6.2

1. कम्पनी 'क' कम्पनी 'ख' की 50 प्रतिशत पूँजी को नियंत्रित करती है। इसलिए 'क' कम्पनी को नियंत्रक कम्पनी कहा जाता है। उन अन्य परिस्थितियों के विषय में बताइए जब एक कम्पनी नियंत्रक कम्पनी बन जाती है।

2. नीचे संयुक्त पूँजी कम्पनी की विशेषताएं दी गई हैं। इन कथनों में से निजी कम्पनी और सार्वजनिक कम्पनी की विशेषताओं की पहचान कर, कथनों के बाद दिये कोष्ठकों में सही का निशान लगाइये।

   (क) सदस्यों की अधिकतम संख्या 50 है।

   (ख) यह सात सदस्यों से शुरू की जा सकती है।

   (ग) इसकी न्यूनतम चुकता पूँजी पाँच लाख रुपये है।

   (घ) अंशधारक अपने अंशों का हस्तांतरण नहीं कर सकते हैं।

   (ङ) यह जनता को अपने अंशों के अभिदान करने के लिए आमंत्रित कर सकती है।

निजी कम्पनी				सार्वजनिक कम्पनी			
(क)	(ख)			(क)	(ख)		
(ग)	(घ)	(ङ)		(ग)	(घ)	(ङ)	

3. नीचे दिये गए अधूरे शब्दों को, प्रत्येक कथन के लिए दिये गए संकेतों में पूर्ण कीजिए। प्रत्येक रिक्त स्थान एक वर्ण को दर्शाता है। पहला आपके लिए पूर्ण कर दिया गया है।

   (क) सा—र्वज—क कम्पनी (सार्वजनिक)

   (ख) वि——ी कम्पनी

   (ग) —वि—क कम्पनी

   (घ) नि———क कम्पनी

   (ङ) ब—रा——य कम्पनी

   (च) स—का— कम्पनी

संकेत

(क) एक कम्पनी जिसमें न्यूनतम सात सदस्यों की जरूरत होती है।

(ख) कम्पनी जिसका संस्थापन भारत के बाहर हुआ है।

(ग) कम्पनी जिसका गठन संसद के विशेष एक्ट द्वारा हुआ है।

(घ) कम्पनी जिसकी 50 प्रतिशत पूंजी पर किसी अन्य कम्पनी का अधिकार है।

(ङ) एक कम्पनी जिसका कारोबार एक से अधिक देशों में है।

(च) कम्पनी जिसके कम से कम 51 प्रतिशत चुकता पूँजी पर सरकारी नियंत्रण हो।

6.5 संयुक्त पूँजी कम्पनी के गुण

व्यावसायिक संगठन के रूप में एक कम्पनी बड़े स्तर पर व्यवसाय करने के लिए बहुत प्रसिद्ध है। इसके निम्नलिखित गुण हैं:

(क) विस्तृत संसाधन : एक संयुक्त पूँजी कम्पनी अपने सदस्यों की बड़ी संख्या होने से बड़े पैमाने पर वित्तीय संसाधनों का प्रबन्ध कर सकती है और बिना किसी कठिनाई के ऋण–पत्रों, सार्वजनिक जमाओं, वित्तीय संस्थानों से ऋण लेकर अपने कोषों को एकत्र कर सकती है।

(ख) सीमित उत्तरदायित्व : संयुक्त पूँजी कम्पनी में इसके सदस्यों का दायित्व उनके द्वारा रखे गए अंशों के मूल्य तक ही सीमित होता है। यही कारण है कि बड़ी संख्या में छोटे निवेशक कम्पनी में निवेश करने के लिए आकर्षित होते हैं। इससे कम्पनी को बड़ी मात्रा में पूँजी एकत्र करने में मदद मिलती है। अंशधारकों का सीमित दायित्व होने के कारण, कम्पनी बड़ी जोखिमें उठाने में भी सक्षम होती है। यह निवेश करने के निर्णय को सरल बनाने में सहायक है।

(ग) निरन्तर अस्तित्व : कम्पनी कानून द्वारा निर्मित एक कृत्रिम व्यक्ति है और जिसका स्वतन्त्र वैधानिक अस्तित्व होता है। इसका जीवन अपने सदस्यों की मृत्यु, दिवालियापन आदि से भी प्रभावित नहीं होता। इसीलिए इसका अस्तित्व निरंतर बना रहता है।

(घ) बड़े पैमाने पर व्यवसाय के लाभ : संयुक्त पूँजी कम्पनी व्यावसायिक संगठन का एकमात्र ऐसा रूप है जो बड़े पैमाने पर व्यवसाय के लिए पूँजी एकत्रित कर सकती है। बड़े पैमाने पर उत्पादन के परिणामस्वरूप कार्य कुशलता में वृद्धि और व्यावसायिक लागत में कमी आती है। यह विस्तार के रास्ते भी खोलती है।

(ङ) तरलता : अंशों का हस्तांतरण निवेशकों को अधिक निवेश के लिए प्रोत्साहित करता है क्योंकि सार्वजनिक कम्पनी के अंशों का पूँजी बाजार में सरलता से हस्तांतरण हो सकता है। जब लोगों के पास निवेश करने के लिए धन होता है तो वे अंश खरीदकर व धन की आवश्यकता होने पर अंशों का विक्रय कर उन्हें रोकड़ में परिवर्तित कर सकते हैं।

टिप्पणी

(च) **पेशेवर प्रबन्धन :** जटिल गतिविधियों एवं व्यापार की बड़ी एवं विस्तृत प्रकृति के कारण कम्पनी में संगठन के प्रत्येक स्तर के लिए पेशेवर प्रबन्धकों की आवश्यकता रहती है। व्यवसाय के बड़े आकार व वित्तीय सुदृढ़ता के कारण कम्पनी इन प्रबन्धकों का भार वहन कर सकती है। इस प्रकार के प्रबन्धन से कम्पनी की कार्यकुशलता में वृद्धि होती है।

(छ) **अनुसंधान और विकास :** सामान्यतया कम्पनी उत्पादन प्रक्रियाओं में सुधार, नये उत्पादों का डिजाइन और प्रवर्तन एवं उत्पादों की गुणवता में सुधार, कर्मचारियों को प्रशिक्षण के नये तरीके इत्यादि में अनुसंधान एवं विकास के लिए बड़ी मात्रा में धन खर्च करती है।

(ज) **कर-लाभ :** हालांकि कम्पनियों को ऊँची दर पर कर चुकाना पड़ता है तथापि उन्हें आयकर अधिनियम के अन्तर्गत कई करों में छूट प्राप्त होने से उनका यह बोझ कुछ कम हो जाता है।

6.6 संयुक्त पूँजी कम्पनी की सीमाएँ

ऊपर हमने संयुक्त पूँजी कम्पनी के गुणों के विषय में पढ़ा लेकिन कई गुणों के होने पर भी व्यवसाय के इस संगठन की कुछ सीमाएं भी हैं। कुछ महत्वपूर्ण सीमाएं नीचे दी गई हैं:

(क) **गठन में कठिनता :** कम्पनी अधिनियम के अनुसार, कम्पनी निर्माण में अनेक कानूनी औपचारिकताओं को पूरा करना पड़ता है। साथ ही सरकार द्वारा समय–समय पर बनाए गए कई नियम एवं बिनियमों का भी पालन करना होता है।

(ख) **समूह द्वारा नियंत्रित :** सैद्धान्तिक रूप से यह आशा की जाती है कि कम्पनी का प्रबन्धान प्रशिक्षित एवं अनुभवी निदेशकों द्वारा किया जाए। लेकिन व्यावहारिक तौर पर अधिकतर मामलों में ऐसा नहीं हो पाता। अधिकतर कम्पनियों का प्रबन्धन एक ही परिवार से संबंध रखने वाले व्यक्तियों द्वारा किया जाता है। चूंकि अधिकतर अंशधारी दूर–दूर फैले होने से, उनका कम्पनी प्रबंधन के विषय में भिन्न–भिन्न दृष्टिकोण होता है। वे अंशधारी जिनके पास कम्पनी के बहुमत वाले अंश होते हैं वह कम्पनी की ओर से सभी निर्णय लेते हैं। इसीलिए कम्पनी के प्रजातांत्रिक गुण व्यवहार में प्रकट नहीं हो पाते।

(ग) **सरकार का अत्यधिक नियंत्रण :** कम्पनी से विभिन्न अधिनियमों के भिन्न–भिन्न प्रावधानों के पालन की अपेक्षा की जाती है। इनकी अवज्ञा से उसे भारी जुर्माना देना पड़ सकता है। यह कम्पनी के सुचारु काम–काज को प्रभावित करता है।

(घ) **निर्णय में देरी :** कम्पनी को निर्णय लेने से पहले कुछ कानूनी कार्यवाहियों को पूरा करना होता है, जैसे उसे कम्पनी के निदेशकों और/अथवा अंशधारकों की साधारण सभा में उनसे अनुमोदन प्राप्त करना होता है। इस प्रकार की औपचारिकताओं को पूर्ण करने में लम्बा समय लगता है, इसीलिए कुछ महत्वपूर्ण निर्णयों में देरी हो जाती है।

टिप्पणी

(ङ) **गोपनीयता का अभाव :** कम्पनी के कई विषयों में गोपनीयता रख पाना मुश्किल होता है क्योंकि उन्हें निदेशक मण्डल और/अथवा सार्वजनिक सभा, जिनकी कार्यवाही अक्सर जनता के सामने खुली रहती है, का अनुमोदन प्राप्त करना होता है।

(च) **सामाजिक बुराईयाँ :** संयुक्त पूँजी कम्पनी एक बड़े स्तर का व्यावसायिक संगठन है जिसके पास पूँजी का बड़ा भंडार होता है। यह इतनी बड़ी मात्रा में इसे बहुत सारी शक्ति प्रदान करता है। इन शक्तियों का दुरुपयोग समाज में अस्वस्थ वातावरण उत्पन्न कर सकता है। जैसे किसी व्यवसाय पर एकाधिकार, उद्योग अथवा उत्पादन पर एकाधिकार; राजनीतिज्ञों और सरकार के कार्यों को प्रभावित करना; श्रमिकों, उपभोक्ताओं और निवेशकों इत्यादि का शोषण आदि।

पाठगत प्रश्न 6.3

1. श्री मोहित ने सार्वजनिक कम्पनी के अंशों में दो लाख रुपये निवेशित किए। एक वर्ष बाद उन्होंने देखा कि कम्पनी ठीक प्रकार से कार्य नहीं कर रही है तथा बाजार में उसके अंशों का मूल्य भी घटता जा रहा है। उन्होंने सोचा कि यदि यही स्थिति रही तो उसके दो लाख रुपये डूब जायेंगे और शायद कम्पनी की देयताओं के भुगतान के लिए उन्हें अपना घर भी बेचना पड़ सकता है। क्या वह सही सोच रहे हैं? अपने उत्तर के पक्ष में तर्क दीजिए।

2. नीचे संयुक्त पूँजी कम्पनी के सन्दर्भ में कुछ कथन व उनके सामने बॉक्स दिये गये हैं, यदि कथन गुण है तो 'ग' और यदि कथन में 'सीमा' है तो दिए गए 'बाक्स' में 'स' लिखें।

   (क) संयुक्त पूँजी कम्पनी में सदस्यों का दायित्व सीमित रहता है।

   (ख) सार्वजनिक कम्पनी के अंशों को बाजार में आसानी से बेचा व खरीदा जा सकता है।

   (ग) संयुक्त पूँजी कम्पनी को गठन से पूर्व कई वैधानिक औपचारिकताओं को पूरा करना होता है।

   (घ) बहुमत वाले अंशों का अंशधारक ही कम्पनी के सभी निर्णय लेता है।

   (ङ) कम्पनी उत्पादन प्रक्रिया में सुधार, नवीन उत्पादों का नवीन प्रवर्तन व विकास आदि पर बड़ी मात्रा में धन व्यय करती है।

6.7 संयुक्त पूँजी वाली कम्पनी की उपयुक्तता

जहां पर व्यवसाय का स्वरूप व्यापक और कार्यक्षेत्र विस्तृत होता है तथा उसमें निहित जोखिम अधिक होता है और बहुत अधिक वित्तीय संसाधनों तथा बड़ी मानव शक्ति की आवश्यकता होती है, वहां संयुक्त पूँजी कम्पनी उपयुक्त होती है। ऐसे व्यवसाय जहां पेशेवर प्रबंधन की आवश्यकता होती है, वहां भी कम्पनी संगठन उपयुक्त रहता है। कुछ व्यवसाय जैसे बैंकिंग एवं

टिप्पणी

बीमा आदि में संयुक्त पूँजी कम्पनी ज्यादा उपयुक्त है। बड़े पैमाने पर उत्पादन की वरीयता के कारण आजकल व्यवसाय के इस प्रकार को अपेक्षाकृत अधिक महत्व दिया जा रहा है।

6.8 संगठन के सही रूप का चयन

आपने व्यवसाय स्वामित्व के विभिन्न रूपों जैसे– एकल स्वामित्व, साझेदारी, संयुक्त हिन्दू परिवार व्यवसाय, सहकारी समितियों एवं कम्पनी के विषय में पढ़ लिया है। आपने यह अवश्य ही देखा होगा कि व्यावसायिक संगठन का कोई भी रूप ऐसा नहीं है जो हमारी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके। कुछ को अधिक वित्तीय एवं प्रबन्धकीय संसाधनों की आवश्यकता है तो कुछ में जोखिम अधिक है। यही कारण है कि हमारी अर्थव्यवस्था में व्यवसाय के विभिन्न रूप प्रचलित हैं। अतः व्यावसायिक संगठन के किसी भी रूप को चुनते समय हम उसके विभिन्न घटकों का विश्लेषण करते हैं तथा अपनी वित्तीय और प्रबन्धकीय क्षमताओं के अनुरूप अधिक उपयुक्त रूप को चुनने का प्रयास करते हैं। अब हम उन तथ्यों का अध्ययन करेंगे जो व्यावसायिक संगठन के सही रूप का चयन करने में हमारी मदद करेंगे।

(क) **संस्थापन में सरलता :** एक अकेला व्यापारी किसी भी समय व्यवसाय आरंभ कर सकता है और अपनी इच्छा से उसे बन्द भी कर सकता है। साझेदारी में आपसी सद्भावना एवं विश्वास का होना आवश्यक है। कम्पनी को संस्थापन के लिए बहुत–सी वैधानिक औपचारिकताओं को पूरा करना पड़ता है। इसीलिए एकल स्वामित्व की स्थापना सबसे सरल है।

(ख) **व्यापक संसाधनों की उपलब्धता :** एक अकेले व्यक्ति का व्यवसाय विश्व में सबसे अच्छा होता है यदि उसके पास प्रचुर मात्रा में संसाधन हों तथा वह उसका प्रबंध करने में सक्षम हो। लेकिन साधारणतया एक अकेला व्यक्ति व्यवसाय को चलाने में इसीलिए सक्षम नहीं होता है क्योंकि उसके पास सीमित संसाधन होते हैं और उसमें प्रबंधन की योग्यता भी सीमित होती है। साझेदारी में भी साझेदारों के वित्तीय संसाधन सीमित होते हैं। इसीलिए केवल कम्पनी ही बड़े व्यवसाय के प्रबंधन के लिए पर्याप्त पूँजी और विशेषज्ञों की सेवाएं एकत्र कर सकती है।

(ग) **दायित्व अथवा जोखिम :** हम जानते हैं कि एकल स्वामित्व व साझेदारी दोनों में सदस्यों का दायित्व असीमित होता है और सहकारी समिति व कम्पनी के सदस्यों का दायित्व सीमित होता है। चूंकि सदस्य बड़ा जोखिम उठाने से हिचकिचाते हैं इसीलिए वे एक कम्पनी में निवेश करना पसंद करते हैं।

(घ) **स्थायित्व :** किसी व्यवसाय की सफलता के लिए स्थायित्व जरूरी होता है। कम्पनी और सहकारी समिति का अस्तित्व इसके सदस्यों के अस्तित्व और धन पर निर्भर नहीं करता है। व्यावसायिक संगठन के प्रकार एकल स्वामित्व तथा साझेदारी का अस्तित्व सदस्यों

टिप्पणी

से जुड़ा है। उनकी मृत्यु या दिवालिया होने की दशा में विघटन हो जाता है किन्तु कम्पनी का अस्तित्व, इसके सदस्यों की मृत्यु अथवा दिवालिया होने पर भी जारी रहता है।

(ङ) **लचीलापन :** व्यवसाय के एक आदर्श रूप के संचालन में लचीलापन होना आवश्यक है। इसके संचालन के लिए निर्णयों का शीघ्रता से एवं उन का शीघ्रता से लागू करना जरूरी है। इसके संचालन में किसी भी प्रकार की कठोरता, इसके अस्तित्व एवं विकास के लिए लाभदायी नहीं होगी।

कम्पनी अधिक लचीलेपन का लाभ उठाती है क्योंकि वित्तीय आवश्यकता होने पर यह कभी भी पूँजी एकत्रित कर सकती है, साथ ही सदस्यों की संख्या में वृद्धि कर सकती है। साझेदारी में सदस्यों की अधिकतम संख्या २० है। एकल स्वामित्व में केवल एक सदस्य होता है तथा उसके वित्तीय साधनों की उपलब्धता भी सीमित होती है।

लेकिन कामकाज में सबसे अधिक लचीलापन केवल एकल स्वामित्व संगठन में ही होता है। उसे अन्य सदस्यों के अनुमोदन की आवश्यकता नहीं होती जैसा कि साझेदारी या कम्पनी अधिनियम का प्रावधान है। इसीलिए, एकल स्वामित्व के मामले में व्यवसाय की प्रकृति एवं इसके संचालन को किसी भी समय परिवर्तित करने में सरलता होती है।

(च) **गोपनीयता :** एकल व्यापारी अपने व्यवसाय का स्वामी होता है। उसे अपनी गोपनीयता को किसी अन्य से बांटना जरूरी नहीं होता। साझेदारी पारस्परिक एजेंसी पर आधारित होती है, इसीलिए इसके सभी सदस्यों को व्यवसाय की प्रत्येक जानकारी प्राप्त करने का अधिकार होता है। लेकिन उनके लिए भी गोपनीयता रखना अधिक कठिन नहीं होता। कम्पनी को बहुत सारे दस्तावेजों को जमा कराना होता है तथा उनको अपनी वार्षिक रिपोर्ट में प्रकाशित करना होता है। इसलिए कम्पनी संगठन में सबसे कम गोपनीयता होती है।

(छ) **सरकार का अत्यधिक नियंत्रण :** जबकि सभी व्यवसायों में सरकारी विनियमों को नजर अंदाज करना संभव नहीं है लेकिन फिर भी एक व्यवसायी ऐसा व्यावसायिक संगठन चुनना चाहेगा जिस पर सरकारी हस्तक्षेप कम से कम हो। एक कम्पनी को तो अपना व्यवसाय आरंभ करने से पूर्व ही बहुत सारी वैधानिक औपचारिकताओं को पूरा करना होता है। यहाँ तक कि स्थापना के उपरान्त भी कम्पनी को बहुत–से वैधानिक प्रावधानों का पालन करना पड़ता है। एकल स्वामित्व और साझेदारी में सरकार का नियंत्रण अपेक्षाकृत कम होता है।

आगे दी गई सारणी एकल स्वामित्व, साझेदारी और कम्पनी की विशेषताओं में भिन्नता को प्रकट करती है:

टिप्पणी

विशेषताएं	ज्यादा लाभकारी रूप	कम लाभकारी रूप
1. वित्त की उपलब्धता	कम्पनी	एकल स्वामित्व
2. गठन और समापन की लागत	एकल स्वामित्व	कम्पनी
3. गठन और समापन में सरलता	एकल स्वामित्व	कम्पनी
4. स्वामित्व के हस्तांतरण या वापिस लेने की सरलता	कम्पनी	साझेदारी
5. प्रबन्धन में कुशलता	कम्पनी	एकल स्वामित्व
6. किसी भी स्थिति में संचालन की स्वतन्त्रता	एकल स्वामित्व	कम्पनी
7. सरकारी नियंत्रण एवं प्रतिबंध	एकल स्वामित्व	कम्पनी
8. जीवन की निरन्तरता	कम्पनी	एकल स्वामित्व
9. संचालन में सरलता	एकल स्वामित्व	कम्पनी

पाठगत प्रश्न 6.4

1. जहाँ पर व्यवसाय बड़ा हो, संचालन का क्षेत्र व्यापक हो तथा जोखिम की मात्रा भी अधिक हो, वहां पर संयुक्त पूंजी कम्पनी संगठन ही उपयुक्त है। अन्य कौनसी ऐसी परिस्थितियाँ हैं, जिनके अन्तर्गत संयुक्त पूँजी कम्पनी अधिक उपयुक्त है? ऐसे किन्हीं दो कारणों को लिखिए।

2. ऐसे कई कारक हैं जो व्यवसाय संगठन के किसी विशेष रूप के चयन को निर्धारित करते हैं। संगठन के रूपों के नाम बताओ, जैसे एकल स्वामित्व अथवा संयुक्त पूँजी कम्पनी, जिसे निम्नलिखित कारकों को ध्यान में रखकर वरीयता दी जा सकती है।

   (क) यह बड़े व्यवसाय के प्रबन्ध के लिए विशेषज्ञों का ज्ञान और बड़ी पूँजी का प्रबन्ध कर सकती है।

   (ख) अधिकतम गोपनीयता बनाए रखना संभव है।

   (ग) बहुत कम सरकारी नियंत्रण।

   (घ) सदस्य की मृत्यु अथवा उसके दिवालियेपन का इसके अस्तित्व पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

   (ङ) संचालन में ज्यादा लचीलापन होता है।

6.9 विभिन्न व्यावसायिक संगठनों में अन्तर

अब तक हमने विभिन्न प्रकार के व्यावसायिक संगठनों के विषय में पढ़ा है। यदि हम उनकी विशेषताओं का अध्ययन करें तो पाएंगे कि उनमें से प्रत्येक दूसरे से भिन्न है। आइये, व्यवसाय के इन विभिन्न रूपों के मध्य में अंतर जानें।

साझेदारी एवं संयुक्त पूंजी वाली कम्पनी के बीच अन्तर

आधार	*साझेदारी*	*संयुक्त पूँजी कम्पनी*
1. स्थापना	इसकी स्थापना सरल है क्योंकि पंजीयन अनिवार्य नहीं है।	स्थापना के लिए कई कानूनी औपचारिकताएँ पूरी करनी होती हैं।
2. संचालन	भारतीय साझेदारी अधिनियम 1932 द्वारा शासित।	कम्पनी अधिनियम 1956 द्वारा शासित।
3. सदस्यता	कम से कम दो तथा अधिकतम बैंकिंग व्यवसाय के लिए दस तथा अन्य व्यवसाय में बीस।	निजी कम्पनी में कम से कम दो तथा अधिकतम पचास। सार्वजनिक कम्पनी में कम से कम सात और अधिकतम की कोई सीमा नहीं।
4. वैधानिक स्थिति	कोई स्वतन्त्र वैधानिक अस्तित्व नहीं।	अपने सदस्यों से स्वतन्त्र वैधानिक अस्तित्व।
5. दायित्व	व्यक्तिगत एवं संयुक्त रूप से असीमित।	दायित्व इसके पास अंशों के अंकित मूल्य तक सीमित।
6. प्रबन्ध	सभी साझेदारों को अथवा किसी एक को दूसरों की ओर से प्रबंध अधिकार।	केवल निदेशक मण्डल को ही प्रबंध अधिकार।
7. अंशों का हस्तांतरण	सभी साझीदारों की स्वीकृति आवश्यक।	अंशों के हस्तांतरण की स्वतन्त्रता।
8. अस्तित्व	साझेदार की मृत्यु, सेवानिवृत्ति या पागल होने पर फर्म का विघटन।	स्थायी अस्तित्व जिस पर अंशधारियों की मृत्यु, सेवानिवृत्ति एवं दिवालिया होने का कोई प्रभाव नहीं।
9. वित्त	वित्त जुटाने के साधन सीमित।	वित्त जुटाने के विस्तृत एवं असीमित साधन।

टिप्पणी

संयुक्त पूँजी कम्पनी एवं सहकारी समितियों के बीच में अंतर

आधार	संयुक्त पूँजी कम्पनी	सहकारी समिति
1. स्थापना	कम्पनी रजिस्ट्रार के पास पँजीयन कराने के बाद अस्तित्व में आती है।	सहकारी समितियों के रजिस्ट्रार के पास पंजीयन के बाद अस्तित्व में आती है।
2. सदस्यता	सदस्य पूरे देश में कहीं से भी तथा संसार के दूसरे देशों से हो सकते हैं। निजी कम्पनी में न्यूनतम दो तथा अधिकतमपचास तथा सार्वजनिक कम्पनी में न्यूनतम सात तथा अधिकतम कितने भी हो सकते हैं।	अधिकतर सदस्य स्थानीय अथवा एक ही क्षेत्र के होते हैं तथा न्यूनतम दस तथा अधिकतम की कोई सीमा नहीं।
3. उद्देश्य	साधारणतया लाभ कमाने के उद्देश्य से व्यवसाय चलाते हैं।	विशेषतः सदस्यों एवं समाज को सेवा प्रदान करना।
4. संचालन	कम्पनी अधिनियम, 1956 द्वारा शासित	भारतीय सहकारी समिति अधिनियम, 1912, तथा बहु–राज्य सहकारी समिति अधिनियम 2002 तथा राज्य सहकारी समिति अधिनियम द्वारा शासित।
5. प्रबन्धन	कम्पनी का प्रबन्ध अंशधारियों द्वारा चुने गए निदेशक मण्डल द्वारा होता है। अंशधारियों के वोट उनके पास अंशों की संख्या के बराबर होते हैं।	समिति का प्रबन्ध सदस्यों द्वारा चुनी गई प्रबन्धक समिति करती है। प्रत्येक सदस्य का एक वोट होता है।
6. हित का हस्तांतरण	निजी कम्पनी को छोड़कर सार्वजनिक कम्पनी में स्वतंत्र रूप से अंशों का हस्तांतरण वैधानिक उत्तराधिकारी को प्राप्त होता है।	अंशों का हस्तांतरण केवल सदस्यों की स्वीकृति द्वारा ही वैधानिक उत्तराधिकारी को संभव है अन्यथा अंश समिति को वापिस कर दिए जाते हैं।
7. दायित्व	सदस्यों का दायित्व उनके पास अंशों के मूल्य तक सीमित रहता है।	दायित्व सीमित होता है लेकिन यदि समिति चाहे तो यह असीमित हो सकता है।

8. लाभांश का भुगतान	कम्पनी द्वारा प्रतिवर्ष लाभांश की दर निश्चित की जाती है तथा इसमें अन्तर हो सकता है।	भारतीय सहकारी समिति 1912 अधिनियम के अनुसार सदस्यों को एक निश्चित दर पर लाभांश का भुगतान किया जाता है।

टिप्पणी

6.10 बहुराष्ट्रीय निगम

अपने दैनिक जीवन में हम देशी तथा विदेशी मूल की अलग–अलग वस्तुओं का उपयोग करते हैं। ये विदेशी वस्तुएं (माल) या तो आयात की जाती हैं अथवा विदेशी कम्पनियों द्वारा हमारे देश में बनाई जाती हैं। आप सोचते होंगे कि विदेशी कम्पनियाँ हमारे देश में क्यों आ रही हैं? वस्तुतः ये भारत में माल बनाने और सेवाएँ देने या अपना सामान बेचने आती हैं। इसी प्रकार भारतीय कम्पनियाँ भी अपने व्यापार का क्षेत्र अपने देश की सीमाओं से बाहर बढ़ा रही हैं। यह वैश्वीकरण कहलाता है, जिसका तात्पर्य है–आर्थिक क्रिया–कलापों का देश की सीमा से बाहर, विश्व बाजार की खोज में विस्तार।

6.10.1 बहुराष्ट्रीय निगम का अर्थ तथा विशेषताएँ

साधारणतः एक बहुराष्ट्रीय निगम (जिन्हें बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ भी कहते हैं) वह है जो एक देश में कम्पनी के रूप में पंजीकृत हुआ है किंतु अन्य देशों में फैक्टरियां स्थापित कर या शाखाएं खोलकर अथवा सहायक इकाइयों को स्थापित कर व्यवसाय चलाता है। ऐसी कम्पनी एक या अधिक देशों में माल का उत्पादन या सेवा प्रदान करती है। आपने भारत में व्यापार चलाने वाले कई बहुराष्ट्रीय निगमों (एमएनसी) के बारे में सुना होगा जैसे ह्युंडाई मोटर कम्पनी, कोकाकोला कम्पनी, सोनी कार्पोरेशन, मैक्डोनेल्ड कारपोरेशन, सिटी बैंक आदि।

इन सभी निगमों को सामान्यतः कई देशों में वस्तु उत्पादन, विपणन और अन्य बहुत सुविधाएँ उपलब्ध है। इनकी विक्रय की मात्रा, अर्जित लाभ तथा उनकी सम्पत्ति का मूल्य अधिक होता है। इन्होंने अपनी शाखाएं और सह–इकाइयाँ हमारे देश तथा अन्य देशों में स्थापित कर ली हैं जिनका नियंत्रण ये अपने गृह–देश की कम्पनियों के मुख्यालयों से करते हैं। गृह–देश इन्हें नीति–निर्देश भी देता है।

वैश्विक उद्यमों (बहुराष्ट्रीय कम्पनियों) की विशेषताएं

बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं :

1. **केन्द्रीकृत प्रबन्ध :** एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी का मुख्यालय अपने गृह देश में होता है। यह अपने व्यवसाय को दूसरे देशों में शाखाएं एवं सहायक कम्पनियां खोलकर विस्तार देता है। सभी शाखाओं एवं सहायक कम्पनियों को मुख्यालय द्वारा निर्धारित नीतियों के अनुसार कार्य करना होता है।

टिप्पणी

2. **व्यवसाय का विश्व भर में विस्तार :** बहुराष्ट्रीय कम्पनी का व्यवसाय कई देशों में फैला होता है। ऐसी कम्पनी अपने मेहमान देश की परिस्थितियों का पूरी तरह से लाभ उठाती है। इसमें सस्ती श्रम शक्ति एवं कच्चे माल की उपलब्धता सम्मिलित है।

3. **उत्तम गुणवत्ता वाले उत्पाद :** एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी को वैश्विक स्तर पर प्रतियोगिता का सामना करना होता है। इसलिए यह उत्पाद की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देती है।

4. **बड़ा आकार :** एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी के पास बहुत अधिक सम्पत्तियां होती हैं। आई. बी.एम. की परिसम्पत्तियों का मूल्य लगभग 8 अरब डालर है। इसी प्रकार से आई.टी. टी. कम्पनी की 70 देशों में 800 शाखाएं हैं।

5. **अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में पहुंच :** एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी सरलता से अपने अनेक उत्पादों, अच्छी गुणवत्ता से अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में अपनी पहचान बना लेती है।

6. **विज्ञापन पर विशेष ध्यान :** एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी विज्ञापन पर विशेष ध्यान देती है। यह इसकी सफलता का राज है।

6.10.2 बहुराष्ट्रीय निगम के लाभ

बहुराष्ट्रीय निगम राष्ट्रीय सीमाओं के पार, बड़े पैमाने पर उत्पादन और वितरण क्रियाएं करके, बड़ी मात्रा में लाभ अर्जित कर कई सुविधाएँ प्राप्त करते हैं। साथ ही जिस देश में यह कार्य करते हैं वह देश भी इनसे कई प्रकार से लाभान्वित होते हैं। ये इस प्रकार हैं:

(क) **विदेशी पूँजी का निवेश :** बहुराष्ट्रीय निगमों द्वारा प्रत्यक्ष पूँजी निवेश विकासशील देशों के आर्थिक विकास को गति देता है।

(ख) **रोज़गार में वृद्धि :** बहुराष्ट्रीय निगमों द्वारा औद्योगिक तथा व्यापारिक क्रियाओं का विस्तार मेजबान देशों में रोज़गार के अवसरों में वृद्धि करने के साथ उनके जीवन स्तर में सुधार लाता है।

(ग) **विकसित तकनीक का प्रयोग :** बहुराष्ट्रीय निगम बहुत बड़ी मात्रा में संसाधनों का प्रयोग कर शोध और विकास की क्रियाएं अपनाते हैं जो उत्पादन के उन्नत तरीकों और प्रक्रियाओं की मदद से वस्तुओं की गुणवत्ता में वृद्धि करने में सहायक होते हैं। धीरे–धीरे अन्य देश भी इन तकनीकों को अपना लेते हैं।

(घ) **सहायक इकाइयों की वृद्धि :** बहुराष्ट्रीय निगमों के बड़े पैमाने पर कार्यों के फलस्वरूप मेजबान देश में भी वस्तुओं एवं सेवाओं के आपूर्तिकर्ता एवं संबंधित सहायक इकाइयों का विकास होता है।

(ङ) **निर्यात वृद्धि और विदेशी मुद्रा का आगमन :** मेजबान देशों में बनाया गया माल (वस्तुएँ) कभी–कभी बहुराष्ट्रीय निगम द्वारा निर्यात भी किये जाते हैं। इस प्रकार अर्जित विदेशी मुद्रा से मेजबान देशों के विदेशी मुद्रा भण्डार में वृद्धि होती है।

टिप्पणी

(च) **स्वस्थ प्रतिस्पर्धा :** बहुराष्ट्रीय निगम द्वारा अच्छी गुणवत्ता वाले माल का उत्पादन, घरेलू निर्माताओं को बाजार में बने रहने के लिए अपना प्रदर्शन सुधारने को प्रेरित करता है।

6.10.3 बहुराष्ट्रीय निगम की सीमाएं

इसमें कोई संदेह नहीं कि उपर्युक्त लाभ मेजबान देशों के लिए लाभप्रद हैं। लेकिन बहुराष्ट्रीय निगम की कई सीमायें भी हैं जिन पर भी हमें ध्यान देना चाहिए:

(क) **मेजबान देशों की प्राथमिकताओं की ओर कम ध्यान :** बहुराष्ट्रीय निगम प्रायः अधिक लाभ देने वाले उद्योगों में ही पूँजी का निवेश करते हैं तथा मेजबान देश के पिछड़े क्षेत्रों में मूलभूत उद्योगों को विकसित करने और सेवाएँ प्रदान करने की ओर ध्यान नहीं देते हैं।

(ख) **घरेलू उद्योगों पर दुष्प्रभाव :** बहुराष्ट्रीय निगम, बड़े पैमाने पर कार्य करने और तकनीकी कुशलताओं से परिपूर्ण होने के कारण मेजबान देशों के बाजार पर शासन करता है और एकाधिकार शक्ति को प्राप्त कर लेने की ओर अग्रसित होता है। अतः कई स्थानीय उद्योग बंद होने के लिए बाध्य हो जाते हैं।

(ग) **संस्कृति में परिवर्तन :** बहुराष्ट्रीय निगम द्वारा मेजबान देशों में दी जाने वाली उपभोक्ता वस्तुएँ अक्सर स्थानीय सांस्कृतिक मानदंडों के अनुरूप नहीं होती। इस प्रकार लोगों की उपभोग की आदतें, खाद्य और परिधान के मामलों में उन्हें उनकी अपनी सांस्कृतिक विरासत से दूर ले जाती हैं।

6.10.4 संयुक्त उपक्रम

संयुक्त उपक्रम व्यवसाय का वह स्वरूप है, जिसमें दो अथवा दो से अधिक इकाइयां पूंजी लगाती हैं तथा व्यवसाय के परिचालन में भाग लेती हैं। यह संगठन निजी, सरकारी संगठन अथवा विदेशी कम्पनी हो सकते हैं। संयुक्त उपक्रम व्यवसाय में व्यावसायिक इकाइयां विशिष्ट उद्देश्य के लिए एक दूसरे से जुड़ते हैं। इसके कारण कोष, तकनीकी ज्ञान एवं प्रबन्ध कौशल का एकत्रीकरण हो जाता है। संयुक्त उपक्रम में पारितोषिक एवं जोखिम को इकाइयां आपस में बांट लेती हैं। उदाहरण के लिए जापान की सुजूकी लि. एवं भारत की मारूती लि. ने मिलकर मारूती सुजुकी इन्डिया लि. बनाई जो एक संयुक्त उपक्रम है।

संयुक्त उपक्रम की विशेषताएं

1. **उन्नत तकनीक की उपलब्धता :** जब दो या दो से अधिक कम्पनियां मिलती हैं, तो उत्पादन की आधुनिकतम तकनीक का लाभ मिलता है। इससे लागत में कमी आती है तथा गुणवत्ता में सुधार होता है।

2. **पूंजी का पूर्ण उपयोग तथा उत्पादन में वृद्धि :** संयुक्त उपक्रम से पूँजी के अधिकतम उपयोग में सहायता मिलती है। इससे पूंजी तथा अन्य संसाधनों की कम से कम बर्बादी होती है।

टिप्पणी

3. **संसाधनों एवं विशिष्टताओं का एकत्रीकरण :** दो या अधिक कम्पनियों के संसाधनों एवं कार्यकुशलता का संयुक्त उपक्रम का गठन कर प्रभावी ढंग से उपयोग किया जा सकता है। इससे बड़े पैमाने पर उत्पादन होगा तथा बड़े पैमाने पर उत्पादन के लाभ इनको मिल सकेंगे।

4. **नवीनीकरण :** एक उच्च स्तरीय प्रतियोगी बाजार में दो उद्यमों के विचार एक तकनीक के नवीन विचार एवं उत्पादों की रचना में सहायक होते हैं।

5. **जोखिम एवं पारितोषिक का बंटवारा :** जो उद्यम एक संयुक्त उपक्रम बनाने के लिए हाथ मिलाते हैं, उनके लाभ में वृद्धि होगी जिसको वह आपस में बांटेंगे। संयुक्त उपक्रम के साझेदार व्यवसाय को होने वाली जोखिम को भी बांटते हैं।

6.10.5 सार्वजनिक निजी साझेदारी

सार्वजनिक निजी साझेदारी का अर्थ है वित्तीयन, डिजायन करने एवं आधारभूत ढांचा की सुविधाओं में सार्वजनिक क्षेत्र एवं निजी क्षेत्र के बीच साझेदारी। सार्वजनिक निजी क्षेत्र में निजी क्षेत्र धन, विशेषज्ञता एवं तकनीकी ज्ञान का योगदान दे सकता है। आधारभूत ढांचा जैसे कि बिजली, परिवहन, शिक्षा, स्वास्थ्य, प्रबन्धन का रखरखाव सार्वजनिक निजी साझेदारी द्वारा किया जाता है।

सार्वजनिक निजी साझेदारी की विशेषताएं

1. इसकी कार्य योजनाएं जन साधरण के लाभ के लिए होती हैं।
2. इसकी कार्य योजना में इसके पूरे कार्यकाल के दौरान सरकार की भागेदारी रहती है।
3. इसका उपयोग सरकार के उच्च प्राथमिकता प्राप्त कार्य योजनाओं में होता है।
4. इस कार्य योजना में दोनों अर्थात निजी एवं सरकारी क्षेत्र की पूंजी, विशेषज्ञता एवं अनुभव सम्मिलित रहते हैं।
5. इसकी कार्य योजना में उत्तरदायित्व एवं जोखिम को निजी एवं सरकारी क्षेत्र में बाँटा जाता है।

निजी सरकारी साझेदारी के लाभ

1. इसका प्रयत्न कार्य योजनाओं के तीव्र क्रियान्वयन में सहायक होता है।
2. निजी एवं सार्वजनिक दोनों क्षेत्रों की विशेषताओं के कारण यह उच्च गुणवत्ता वाली सेवाएं प्रदान कर पाती हैं।
3. इनमें प्रबन्धन की कार्य कुशलता के कारण लागत में कमी आती है।
4. इसमें जोखिम सरकार और निजी क्षेत्रों में बंट जाता है।

टिप्पणी

5. इसमें पूंजी निवेश दोनों क्षेत्रों द्वारा किया जाता है। जिससे सरकार को ऋण के झंझट से मुक्ति मिल जाती है।

6. सरकार जन सेवाओं की लागत एवं गुणवत्ता के लिए उत्तरदायी रहती है।

निजी सरकारी साझेदारी के दोष

1. निजी क्षेत्र का लक्ष्य अधिकतम लाभ कमाना होता है, लेकिन ऐसी सोच जनकार्यों के लिए ठीक नहीं रहती।

2. इससे देश के महत्वपूर्ण गुप्त तथ्यों के सार्वजनिक होने की सम्भावना रहती है।

3. कभी–कभी सरकार एवं निजी फर्मों के बीच विरोधाभास के कारण महत्वपूर्ण कार्ययोजनाओं के पूरा करने में देरी हो जाती है।

पाठगत प्रश्न 6.5

1. बहुराष्ट्रीय निगम की सामान्य विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

2. नीचे संयुक्त पूँजी कम्पनी, साझेदारी और सहकारी संस्था के मध्य में अन्तर के कुछ बिन्दु दिए गए हैं। वृतों में दिए गए व्यावसायिक संगठनों के प्रकार से उससे सम्बन्धित बिन्दुओं को तीर से मिलाइए:

(क) व्यावसायिक संगठनों के भिन्न–भिन्न रूप जो वर्ष में स्वीकृत अधिनियमों द्वारा शासित हों:

(i) 1932	(ii) 1956	(iii) 1912
संयुक्त पूँजी कम्पनी	सहकारी समिति	साझेदारी

(ख) एक फर्म के लिए वांछित न्यूनतम सदस्य संख्या :

(i) 2	(ii) 7	(iii) 10
संयुक्त पूँजी कम्पनी	सहकारी समिति	साझेदारी

(ग) सदस्यों की अधिकतम संख्या:

(i) 50	(ii) 20	(iii) कोई सीमा नहीं
संयुक्त पूँजी कम्पनी	सहकारी समिति	साझेदारी

टिप्पणी

(घ) प्रबन्धन

(i) चुनी गई समिति द्वारा प्रबंधित — संयुक्त पूँजी कम्पनी

(ii) एक या अधिक सदस्यों द्वारा प्रबंधित — सहकारी समिति

(iii) चुने गए निदेशकों के बोर्ड द्वारा प्रबंधित — साझेदारी

3. बहुविकल्पीय प्रश्न

क) एक ऐसा व्यावसायिक संगठन, जिसकी स्थापना दो अलग–अलग व्यावसायिक इकाइयों ने मिलकर की है, को कहते हैं :

अ) एकल स्वामित्व
ब) संयुक्त उपक्रम
स) सहकारी समिति
द) सार्वजनिक कम्पनी

ख) सार्वजनिक क्षेत्र एवं निजी क्षेत्र के बीच साझेदारी के परिणाम स्वरूप स्थापित संगठन का क्या नाम होता है :

अ) एकल स्वामित्व
ब) सार्वजनिक कम्पनी
स) सार्वजनिक निजी साझेदारी
द) सहकारी समिति

आपने क्या सीखा

- संयुक्त पूँजी कम्पनी एक कृत्रिम व्यक्ति है जिसका अपना एक पृथक वैधानिक अस्तित्व होता है, तथा जिसका उत्तराधिकार निरंतर है।
- संयुक्त पूँजी वाली कम्पनी की विशेषताएँ:
  - यह एक कृत्रिम व्यक्ति है।
  - इसकी स्थापना लम्बी वैधानिक कार्यविधि द्वारा होती है तथा इसमें काफी समय लगता है।
  - इसका स्वतन्त्र पृथक वैधानिक अस्तित्व होता है।
  - इसके लिए अधिकृत हस्ताक्षर को सामान्य मुहर भी कहते हैं।
  - इसका स्थायित्व निरंतर बना रहता है।
  - इसके सदस्यों का दायित्व सीमित होता है।
  - सदस्य अंशों के हस्तांतरण के लिए स्वतन्त्र होते हैं।
  - संयुक्त पूँजी वाली कम्पनी का प्रबंधन प्रजातांत्रिक तरीके से होता है।

टिप्पणी

- कम्पनियों के प्रकार:
  - निजी कम्पनी
  - सार्वजनिक कम्पनी
  - सरकारी कम्पनी
  - सांविधिक कम्पनी
  - चार्टर्ड कम्पनी
  - विदेशी कम्पनी
  - भारतीय कम्पनी
  - बहुराष्ट्रीय निगम (कम्पनी)
  - नियंत्रक कम्पनी
  - सहायक कम्पनी

- **संयुक्त पूँजी कम्पनी के गुण :** एक संयुक्त पूँजी कम्पनी बड़े पैमाने पर वित्तीय संसाधनों की व्यवस्था कर सकती है। इसके सदस्य सीमित दायित्वों का लाभ ले सकते हैं। इसका अस्तित्व निरंतर बना रहता है। इस प्रकार के संगठन से ही बड़े पैमाने के व्यावसायिक कार्यों से अच्छे लाभ प्राप्त किए जा सकते हैं। अपने क्रिया–कलापों में यह एक पेशेवर प्रबंधन का लाभ उठा सकती है।

- **संयुक्त पूँजी कम्पनी की सीमाएं :** संयुक्त पूँजी कम्पनी की स्थापना में बहुत सारी वैधानिक औपचारिकताएं पूरी करनी होती हैं। इस पर अत्यधिक सरकारी नियंत्रण भी रहता है। व्यवसाय में गोपनीयता बनाए रखना अत्यधिक कठिन होता है। सभी आवश्यक निर्णयों में निदेशक मण्डल और अंशधारकों की आम सभा की स्वीकृति आवश्यक होती है। अतः विशेष निर्णय लेने में समय लगता है। व्यावहारिक रूप से संयुक्त पूँजी कम्पनियां, लोगों के विशिष्ट समूह द्वारा प्रबंधित होती हैं। सारे देश में, इधर–उधर बसे अंशधारक, आमतौर पर कम्पनी के सभी मामलों में रुचि नहीं लेते।

- **संयुक्त पूँजी कम्पनी की उपयुक्तता :** जहाँ व्यवसाय बड़ा है, उद्यम क्षेत्र विस्तृत है, निहित जोखिम बहुत अधिक है, और जहाँ बड़े वित्तीय लाभ और मानव शक्ति की आवश्यकता है, वहाँ संयुक्त पूँजी कम्पनी अधिक उपयुक्त होती है।

- **सही संगठन का चुनाव :** व्यावसायिक संगठन के उपयुक्त प्रकार का चयन करते समय निम्नलिखित कारकों को ध्यान में रखना आवश्यक है:

  (क) स्थापना में सुगमता
  (ख) संसाधनों की उपलब्धता
  (ग) दायित्व या जोखिम
  (घ) स्थिरता
  (ङ) लचीलापन
  (च) गोपनीयता
  (छ) सरकारी नियन्त्रण की सीमा

- **बहुराष्ट्रीय निगम :** व्यवसाय की वह इकाई, जिसका कम्पनी के रूप में पंजीकरण एक देश में हुआ हो परन्तु उसकी फैक्ट्रियां, शाखाएं व सहकारी इकाइयां अन्य दूसरे देशों में भी स्थापित हों, बहुराष्ट्रीय निगम कहलाते हैं।

टिप्पणी

- **बहुराष्ट्रीय निगम के गुण**

  (क) विदेशी मुद्रा का निवेश

  (ख) रोज़गार के अवसर उत्पन्न करना

  (ग) उन्नत तकनीक का प्रयोग

  (घ) सहायक इकाइयों का विकास/वृद्धि

  (ङ) निर्यात में वृद्धि तथा विदेशी मुद्रा का आगमन

  (च) घरेलू कम्पनियों से स्वस्थ प्रतिस्पर्धा

- **बहुराष्ट्रीय निगम की सीमाएं**

  (क) मेजबान देश की आवश्यकताओं को कम प्राथमिकता

  (ख) घरेलू उद्यमों पर प्रतिकूल प्रभाव

  (ग) लोगों की संस्कृति में परिवर्तन

- संयुक्त उपक्रम ऐसा उद्यम है, जिसकी स्थापना दो या अधिक व्यावसायिक इकाइयों द्वारा मिलकर की है। यह पूंजी, तकनीकी ज्ञान एवं प्रबन्ध की कार्यकुशलता के एकत्रीकरण में सहायक होते हैं।

- उन्नत तकनीक, पूँजी का उचित उपयोग, संसाधनों का एकत्रीकरण, विशेषज्ञता, नव प्रवर्तन, जोखिम व पारितोषिक का बंटवारा संयुक्त उपक्रम की विशेषताएं हैं।

- PPP निजी क्षेत्र का तथा सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम के बीच साझेदारी है।

- सरकार की सक्रिय भूमिका, धन का एकत्रीकरण, विशेषज्ञता एवं अनुभव, जोखिम का बंटवारा एवं उत्तरदायित्व आदि PPP प्रकार के संगठन की विशेषताएं हैं।

- PPP प्रकार के उद्यम के दोष हैं– देश की महत्वपूर्ण गुप्त बातों का उजागर होना, सरकारी एवं निजी उद्यम के बीच विरोधाभास।

मुख्य शब्द

कृत्रिम व्यक्ति	भारतीय कम्पनी	अंश
चार्टर्ड कम्पनी	बहुराष्ट्रीय निगम	अंश पूँजी
सामान्य मुहर	स्थायी अस्तित्व	अंशधारक
विदेशी कम्पनी	निजी कम्पनी	सांविधिक कम्पनी
सरकारी कम्पनी	सार्वजनिक कम्पनी	सहायक कम्पनी
नियंत्रक कम्पनी	स्वतन्त्र वैधानिक अस्तित्व	

टिप्पणी

पाठान्त प्रश्न

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. संयुक्त पूँजी कम्पनी में 'अंश' शब्द का क्या अर्थ है?
2. कम्पनी अधिनियम 1956 के अनुसार 'कम्पनी' शब्द का अर्थ उल्लेख कीजिए।
3. बहुराष्ट्रीय निगम से क्या तात्पर्य है?
4. व्यापार आरम्भ करने के संदर्भ में सार्वजनिक कम्पनी तथा निजी कम्पनी के मध्य अन्तर बताइए।
5. केवल नामों को देखकर सार्वजनिक कम्पनी व निजी कम्पनी की पहचान कैसे करेंगे?
6. सार्वजनिक निजी साझेदारी का क्या अर्थ है?
7. संगठन के उस प्रकार का नाम बताइए जिसका गठन दो या अधिक स्वतंत्र इकाइयों के प्रयासों से हुआ हो।

लघु उत्तरीय प्रश्न

8. बताइये कि कम्पनी कृत्रिम व्यक्ति कैसे है?
9. सार्वजनिक कम्पनी की विशेषताएं गिनाइए।
10. सदस्यों की संख्या और चुकता पूँजी के आधार पर निजी और सार्वजनिक कम्पनी के मध्य अन्तर स्पष्ट कीजिए।
11. व्यवसाय संगठन के संयुक्त पूँजी कम्पनी स्वरूप की उपयुक्तता बताइए।
12. निजी कम्पनी द्वारा पूरी की जाने वाली आवश्यक शर्तें कौन–सी हैं?
13. संयुक्त उपक्रम का क्या अर्थ है?
14. सार्वजनिक निजी साझेदारी के किन्हीं तीन लाभों की सूची दीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

15. बड़े स्तर व अधिक जोखिम वाली व्यावसायिक परियोजना के लिए संयुक्त पूँजी संगठन ही क्यों उपयुक्त माना जाता है ? समझाइये।
16. संयुक्त पूँजी कम्पनी की पाँच विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।
17. आप साझेदारी में अपना व्यवसाय चला रहे थे, किन्तु अब आपने एक संयुक्त पूँजी कम्पनी गठित कर ली है। आपने निम्न संदर्भों में क्या अंतर अनुभव किया?

    (क) वैधानिक स्थिति

    (ख) दायित्व, और

    (ग) वित्त की उपलब्धता

टिप्पणी

18. मेजबान देश के लिए बहुराष्ट्रीय निगमों के किन्हीं पाँच लाभों का विस्तार से वर्णन कीजिए।

19. उचित व्यवसाय संगठन का चुनाव करते समय, विचारणीय, किन्ही पाँच घटकों का उल्लेख कीजिए।

20. संयुक्त उपक्रम की विशेषताओं की संक्षेप में विवेचना कीजिए।

21. सार्वजनिक निजी साझेदारी के लाभों एवं दोषों का वर्णन कीजिए।

22. एक सार्वजनिक सीमित कंपनी में एक अभ्यर्थी के रूप में आप एक साक्षात्कार में सम्मिलित हो रहे हैं। साक्षात्कार मंडल के सदस्यों में से एक ने आपसे सार्वजनिक कंपनी तथा सीमित कंपनी के बीच अंतर के बारे में पूछ लिया। साक्षात्कार मंडल को संतुष्ट करने हेतु अपनी बात को किन्हीं पांच बिन्दुओं की सहायता से स्पष्ट कीजिए।

23. एक भारतीय कंपनी तथा जापानी कंपनी के संयुक्त उपक्रम के बारे में एक समाचार सुनकर आपने सोचा कि यह सब क्या है? आप कुछ जानकारी अपनी स्व-अध्ययन सामग्री तथा कुछ जानकारी इंटरनेट से प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। संयुक्त उपक्रम से संबंधित अपनी खोजों को संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

6.1 1. नहीं, क्योंकि कम्पनी का निरंतर अस्तित्व होता है इसलिए वह अपना व्यापार नए सदस्यों की सहायता से जारी रखेगी।

2. (क) अंश (ख) कम्पनी अधिनियम, 1956 (घ) अंश पूँजी
(ग) सामान्य मुहर (घ) निदेशकों

6.2 1. (क) यदि एक कम्पनी का दूसरी कम्पनी के निदेशक मण्डल की नियुक्ति पर नियंत्रण है।
(ख) यदि उसकी सहायक कम्पनी किसी दूसरी कम्पनी की नियंत्रक कम्पनी हो।

2. निजी कम्पनी (क) (घ)
सार्वजनिक कम्पनी (ख) (ग) (ङ)

3. (ख) विदेशी (ग) सांविधिक (घ) नियंत्रक
(ङ) बहुराष्ट्रीय (च) सरकारी

6.3 1. नहीं, अंशधारकों का दायित्व सीमित होता है। पुनः उसके पास अंशों का हस्तांतरण करना अथवा अग्रिम घाटे से बचने के लिए अंशों का विक्रय करने का विकल्प है।

2. (क) ग (ख) ग (ग) स (घ) स (ङ) ग

6.4 1. (क) पेशेवर प्रबंधन की आवश्कता

टिप्पणी

(ख) बहुत अधिक वित्त की आवश्यकता
(ग) अधिक मानवशक्ति की आवश्यकता

2. (क) संयुक्त पूँजी कम्पनी (ख) एकल स्वामित्व (ग) एकल स्वामित्व
(घ) संयुक्त पूँजी कम्पनी (ङ) एकल स्वामित्व

6.5 1. (क) अन्तर्राष्ट्रीय संचालन (ख) बड़ा आकार (ग) केन्द्रीय नियंत्रण

2. (क) (i) 1932 — साझेदारी (ii) 1956 — संयुक्त पूँजी कम्पनी
(iii) 1912 — सहकारी समिति

(ख) (i) — साझेदारी (ii) 7 — सार्वजनिक कम्पनी
(iii) 10 — सहकारी समिति

(ग) (i) 50 — निजी कम्पनी (ii) 20 — साझेदारी
(iii) कोई सीमा नहीं — सहकारी समिति

(घ) (i) चुनी गई समिति द्वारा प्रबंधित — सहकारी समिति
(ii) एक या दो सदस्यों द्वारा प्रबंधित — साझेदारी
(iii) चुने गए निदेशक मण्डल द्वारा प्रबंधित — संयुक्त पूँजी कम्पनी

3. (क) ब (ख) स

करें एवं सीखें

1. कम से कम पाँच बहुराष्ट्रीय निगमों के बारे में सूचनाओं को एकत्रित करके नीचे दिए गए चार्ट के अनुसार, एक चार्ट तैयार कीजिए।

कम्पनी का नाम					
उस देश का नाम जहां उसका मुख्य कार्यालय स्थित है।					
अन्य देश जहां वह व्यवसाय करती है।					
बेची जाने वाली वस्तुओं एवं सेवाओं का नाम					

अभिनयन

1. सुधीर और सुशील दो मित्र हैं और दोनों एक ही गांव के रहने वाले हैं। काफी समय पश्चात् उनकी मुलाकात एक त्यौहार पर होती है। इससे पहले दोनों एक फर्म में साझीदार थे। लेकिन पाँच वर्ष पूर्व सुधीर ने फर्म छोड़ दी और सार्वजनिक कम्पनी में निदेशक के पद को अपना लिया।

टिप्पणी

निम्नलिखित बातचीत दोनों के बीच सम्पन्न हुई :

सुधीर : नमस्ते सुशील। आप कैसे हैं? कम्पनी कैसी चल रही है?

सुशील : नमस्ते सुधीर। मैं ठीक हूँ। हमारी कम्पनी अच्छा व्यवसाय कर रही है। इस वर्ष हमारा लाभ पाँच करोड़ के ऊपर निकल गया है।

सुधीर : बहुत बढ़िया। लेकिन इतना लाभ कमाने के लिए, आपकी कम्पनी ने अवश्य ही बड़ा निवेश किया होगा। है, ना। लेकिन आपने इतनी बड़ी मात्रा में धन का प्रबन्ध कहाँ से किया?

सुशील : वास्तव में, एक सार्वजनिक कम्पनी में सदस्यों का बड़ी संख्या में होने से कम्पनी इतनी बड़ी राशि की व्यवस्था कर सकती है। दूसरी बात, चूंकि उनका दायित्व सीमित होता है अतः वे बिना किसी जोखिम के अपना धन निवेश कर सकते हैं।

आप अपने साझेदारी व्यवसाय को एक संयुक्त पूंजी कम्पनी में, कम से कम निजी कम्पनी में, क्यों नहीं परिवर्तित करते? सुधीर संयुक्त पूँजी कम्पनी की विशेषताओं, गुणों, सीमाओं और उपयुक्तता को जानने के लिए उत्सुक था। सुशील ने उसे बताया। दोनों मित्रों के बीच बातचीत जारी थी।

(अपने आपको सुधीर मानते हुए तथा अपने किसी मित्र को सुशील समझते हुए, इस बातचीत को रोचक बनाने के लिए आगे बढ़ाएं।)

2. आप पिछले कुछ वर्षों से एक भारतीय कम्पनी में मैनेजर के पद पर कार्य कर रहे हैं। आपके पास एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी में कार्य करने का बुलावा आया। जिसके सम्बन्ध में आपने अपने वरिष्ठ साथियों को सूचित कर दिया। जिसके सम्बन्ध में उन्होंने आपसे बातचीत की।

मुख्य प्रबन्धक : सतीश, आप हमारी कम्पनी को क्यों छोड़ना चाहते हो? आप एक अच्छे पद पर हो और वह भी राष्ट्रीय स्तर की एक कम्पनी में।

सतीश : श्रीमान जी, आप बिल्कुल ठीक कहते हैं, लेकिन मुझे एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी में काम करने का अवसर मिल रहा है।

सतीश के मुख्य प्रबन्धक से विचार–विमर्श को जारी रखिए जिससे कि सतीश अपने प्रबन्धक को MNC में कार्य करने के सम्बन्ध में संतुष्ट कर सकें।